



onka ea | kj Å tkz

, | -, | - xk're] (Ph.D.), प्राचार्य  
शासकीय छत्रसाल महाविद्यालय, पिछोर, जिला शिवपुरी, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Corresponding Author

, | -, | - xk're] (Ph.D.), प्राचार्य  
शासकीय छत्रसाल महाविद्यालय,  
पिछोर, जिला शिवपुरी, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 10/03/2023

Revised on : -----

Accepted on : 17/03/2023

Plagiarism : 00% on 10/03/2023



Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

Overall Similarity: **0%**

Date: Mar 10, 2023

Statistics: 13 words Plagiarized / 2713 Total words

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.



'kks'k | kj

वेद शब्द विद् धातु + घञ् प्रत्यय से निष्पन्न है जिसका अर्थ होता है ज्ञान विद् धातु जानने के अर्थ में जिसे जाना जाए, अर्थात् जो जानने योग्य हो, वह सब विद् धातु + और + घञ् प्रत्यय से बने वेद शब्द बोधक है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सम्पूर्ण चराचर जगत् में जो भी है सभी वेद है अर्थात् अन्नतैः वेदः की अवधारणा है, इस अर्थ में वेद अनन्त है। हम कह सकते हैं कि विश्व का समस्त ज्ञान जो भी जान लिया गया है या भविष्य में जाना जाएगा सभी वेद शब्द की परिधि में है इसलिये वेदों को विश्व कोष अर्थात् ज्ञान विज्ञान का मुख्य स्रोत कहा गया है। वर्तमान युग को वैज्ञानिक युग कहा जाता है जहाँ सम्पूर्ण विश्व नित-नूतन आविष्कारों को अंजाम दे रहे हैं। नये-नये आविष्कारों ने ऊर्जा के महत्त्व को और अधिक बढ़ा दिया है। बढ़ते ऊर्जा के उपयोग और सीमित होते ऊर्जा के संसाधनों के दृष्टिगत विश्व वैज्ञानिकों का ध्यान सौर ऊर्जा की तरफ हुआ है और शासन स्तर पर सोलर प्लांटों के माध्यम से विद्युत ऊर्जा के निर्माण पर जोर दिया जा रहा है। इस शोधलेख का ध्येय वैज्ञानिकों एवं सामाजिकों को सौर ऊर्जा के प्राचीनतम ज्ञान से अवगत कराना है।

eq; 'kCn

| kj mtk] v'o'kfä] | lrj' e] | Irinh] cāk.Mh; ] u{k=-

सूर्य ऊर्जा का मुख्य स्रोत है। विश्व में जितने भी प्रकार की ऊर्जा (Energy) है प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सूर्य से ही सम्बन्धित है। सृष्टि का संचालन ऊर्जा आधारित है, ऊर्जा के अभाव में कुछ भी गतिशील नहीं रह सकता है। विश्व की वस्तुएँ, पदार्थ, जीव, वनस्पतियाँ आदि सभी की गतिशीलता या जीवन्तता के मूल में ऊर्जा ही है और सूर्य उसका मुख्य स्रोत है, अतः वेदों में सूर्य

को संसार की आत्मा कहा गया है।

सूर्य आत्मा जगतस्वस्थुषश्व ।<sup>1</sup>

ऋग्वेद और यजुर्वेद में वर्णन है कि सूर्य से ऊर्जा का दोहन त्रित ने किया था। इस त्रित में तीन देवता हैं— इन्द्र, गन्धर्व और वसु। इन्द्र ने ऊर्जा का सर्वप्रथम ज्ञान प्राप्त किया, गन्धर्वों ने इसका परीक्षण किया और वसुओं ने इसको मूर्तरूप दिया। वसु वे विद्वान् हैं, जो भौतिक विज्ञान के विशेषज्ञ हैं। एक ने इसका ज्ञान प्राप्त किया, दूसरे ने परीक्षण द्वारा इसकी सत्यता प्रमाणित की और तीसरे वसुओं ने इसको मूर्तरूप देकर इसका प्रयोग किया। इस प्रकार सौर ऊर्जा के सफल आविष्कार का श्रेय इन्द्र, गन्धर्व और वसु को जाता है।

त्रित एनम् आयुनक्, इन्द्र एणं प्रथमो अध्यतिष्ठित् ।<sup>2</sup>

गन्धर्वो अस्य रशनाम् अगृहणात्, सूर्यादश्वं वसवो निरतष्ट ।<sup>3</sup>

(सूरात सूर्य से अश्वम, अश्वशक्ति, सौर ऊर्जा को वसवः भौतिकी के विशेषज्ञों ने निरतष्ट निकाला)

अथर्ववेद वेद का कथन है कि सूर्य समस्त ऊर्जा (Energy) का स्रोत है, वही ऊर्जा का स्वामी है। इसका आशय यह हुआ कि हमको किसी प्रकार की ऊर्जा के लिए सूर्य का आश्रय लेना पड़ेगा।

सविता प्रसवानाम् अधिपतिः ।<sup>4</sup>

अथर्ववेद में ही एक अन्य मंत्र में कहा गया है कि विराट् ब्रह्म ऊर्जा के रूप में है। सबसे पहले यह ऊर्जा सूर्य को प्राप्त हुई। देवों ने उस ऊर्जा का दोहन करके सौर ऊर्जा प्राप्त की।

तां देवः सविताधोक्, ताम् ऊर्जाम् एवाधोक् ।<sup>5</sup>

I | Ze | kr çdkj dh Åtk|

ऋग्वेद के एक मंत्र में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सूर्य की सात प्रकार की किरणों से सात प्रकार की सप्तपदी ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है। इस ऊर्जा से अन्न (इष) और ऊर्जा शक्ति दोनों प्राप्त हो सकती है। मंत्र में स्पष्ट उल्लेख है कि सौर ऊर्जा उपयोग और उद्योग दोनों के लिए हो सकता है। यदि सौर ऊर्जा से कृषि होने लगे तो देश की बहुत बड़ी समस्या हल हो जाएगी और उद्योगों में सौर ऊर्जा के प्रयोग से अद्भुत क्रान्ति हो सकती है।

अधुक्षत् विप्युषीमिषम् उर्जा सप्तवदीमरिः ।

सूर्यस्य सप्त रश्मिभिः ।<sup>6</sup>

ऋग्वेद और अथर्ववेद में सूर्य की सात किरणों का उल्लेख सप्तरश्मि, सप्ताज्र, सप्तसप्तिआदि शब्दों से किया गया है ।<sup>7</sup>

oKkfud eg|o

इन सात रंगों की किरणों का वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत महत्त्व है। प्रत्येक किरण का अलग-अलग प्रभाव है, इनसे ही संसार के सभी पदार्थों को रूप रंग प्राप्त होता है। यही अनेक प्रकार से विभिन्न रंग, रोगों को दूर करती है और इनके प्रभाव से ही कृषि की उपज घटती-बढ़ती है।

इन सात रंगों वाली किरणों के नाम भी अलग हैं, इनकी तरंग तैर्ध्य और आवृत्ति भी अलग-अलग है। इसका सूत्र VIBGYOR (बै नी आ ह पी ना ला) है।

क्र.	नाम	संकेत	नाम	संकेत	प्रभाव
1	VIOLET	Y	बैगनी	बै	शीतल लाल कर्णों का वर्धक क्षय रोग नाशक।
2	INDIGO	I	नीला	नी	शीतल पित्तज रोगों की नाशक ज्वरनाशक।
3	BLUE	B	आसमानी	आ	शीतल पित्तज रोगों की नाशक ज्वरनाशक।
4	GREEN	G	हरी	ह	समशीतोष्ण वातज रोगों का नाशक रक्तशोधक।
5	YELLOW	Y	पीली	पी	उष्ण, कफज रोगों का नाशक, हृदयरोग एवं उदर रोग नाशक।
6	ORANGE	O	नारंगी	ना	उष्ण, कफज रोगों का नाशक, मानसिक शक्तिवर्धक।
7	RED	R	लाल	ला	अतिउष्ण कफज रोगों का नाशक उत्तेजक।

## I w Z dh fdj . kka dk emy jax

सूर्य की किरणों के मूल रंग तीन हैं— लाल, पीला, नीला। शेष रंग मिश्रण हैं: लाल और नीला से बैंगनी, नीला और सफेद से आसमानी, नीला और पीला से हरा, लाल और पीला से नारंगी। सूर्य की सात रंगों की किरणों के तीन परिवार किए जाते हैं: लाल, पीला, नारंग, हरा, नीला, आसमानी और बैंगनी।

## I kj Å tkz ds vkfo"dkjd

ऋग्वेद का कथन है कि परमात्मा ने सूर्य में ऊर्जा का खजाना रखा है। एक अन्य मंत्र में कहा गया है कि ऋषियों ने सूर्य से ऊर्जा और ऊष्मा का निकाला और सौर ऊर्जा को निकालने का श्रेय वशिष्ठ पुत्रों एवं भारद्वाज ऋषि के वंशजों को है। ये इन मंत्रों के ऋषि हैं:

स शेवधिं नि दधिषे विवस्वति<sup>9</sup>

आ सूर्याद् अभरन् धर्ममेते<sup>10</sup>

## I w Z ea v {k; fufek gS

ऋग्वेद में कहा गया है कि सूर्य और जल (नदी एवं समुद्र) में अक्षय धन विद्यमान है। सूर्य सारे संसार को भोजन देता है अर्थात् सूर्य की ऊर्जा से ही उत्तम कृषि और अन्न उत्पादन होता है।

अप्सु सूर्ये महद् धनम्<sup>11</sup>

आधारयद् हरितोर्भूरिं भोजनम्<sup>12</sup>

## I w Z dh fdj . kka ?kkrd

जहाँ एक ओर सूर्य की किरणों को रोगनाशक, बलवर्धक, स्वास्थ्यवर्धक माना है, वहीं वेदों में इससे होने वाले नुकसान के लिए भी सचेत किया गया है। ऋग्वेद में सूर्य की घातक किरणें (Ultraviolet Rays) से होने वाले भय का संकेत है। यह किरणें पुरुषों आदि को खा जाती हैं, अतः यह पुरुषाद है। इन भयंकर किरणों से सारा संसार भयभीत रहता है। इन किरणों से रक्षा की प्रार्थना की गई है। अथर्ववेद में इन किरणों को कृषि का नाशक बताया गया है:

वयः प्र पतान् पुरुषादः ।

अथेदं विश्वं भुवनं भयाते ।<sup>13</sup>

अवः सूर्यस्य बृहत्तः पुरीषात् ।<sup>14</sup>

न घ्नन् तताप, न हिमो जघान ।<sup>15</sup>

## I w Z ea fo | r p fcdh; r jax ½ Electro Magnetics Waves ½

मैक्सवेल ने प्रकाश तरंगों का स्वरूप विद्युत चुम्बकीय (Electro Magnetic) माना है। ये तरंगे बिना किसी सहारे के आकाश में विचरण कर सकती हैं। प्रकाश तरंगे एक ही हैं परंतु उनकी आवृत्ति और तरंग दैर्ध्य के आधार पर उनमें अंतर आ जाता है।

Wave Length के लिए तरंग दैर्ध्य और Frequency के लिये आवृत्ति शब्दों का प्रयोग होता है।

## fo | r p fcdh; Li DV'e dk Øe

- 1) कॉस्मिक किरणें (Cosmic-Rays)— ये ब्रह्माण्डीय अति सूक्ष्म किरणें हैं।
- 2) गामा किरणें (Gama-Raya)— ये रेडियम से प्राप्त होती है।
- 3) एक्स-रे (X-Rays)— ये धातुओं को भी पार कर जाती है।
- 4) पराबैंगनी किरणें (Ultra-violet)— ये अदृश्य किरणें हैं।

## –' ; fdj . ka ¼VisibleLight½

बैगनी –Violet

नीली –Indigo

आसमानी –Blue

हरी –Green

पीली –Yellow

नारंगी –Orange

लाल –Red

(क) दृश्य किरणों का तरंग दैर्घ्य 10.6 सेमी. से 10.7 सेमी. है अर्थात् प्रति सेकेण्ड  $1/1$  लाख से  $1/10$  लाख मीटर।

(ख) इनकी आवृत्ति (Frequency) 1011 1013 किलोहर्ट्स/प्रति सेकेण्ड है। 10 अरब से 10 खरब हर्ट्स, एक हर्ट्स = एक चक्र।

अवरक्त किरणें— ये अदृश्य है।

सूक्ष्म तरंगे— ये अदृश्य है।

रेडियो तरंगे— ये अदृश्य है।

दृश्य किरणों से ऊपर और नीचे वाली के अदृश्य हैं। तरंग दैर्घ्य और आवृत्ति की दृष्टि से नीचे से ऊपर वाली किरणें क्रमशः अधिक प्रभावशाली है। कॉस्मिक किरणों का आज तक पता नहीं लगा है, अतः उनका विश्लेषण भी पूरा नहीं हो सका है।

## fo | r vkj v' kfu

आचार्य वराहमिहिर ने अपने (476 ई.) ग्रन्थ बृहत्संहिता में विद्युत और अशनि में अन्तर स्पष्ट किया है:

(क) विद्युत या बिजली गिरना— जो तर—तर (तट—तट) शब्द करती हुई, कुटिल और विशाल शरीर वाली प्राणियों या काष्ठ समूह पर प्रज्वलित होकर शीघ्र गिरती है उसे विद्युत कहते हैं।

(ख) अशनी या वज्रपात— जो अधिक शब्द करती हुई वक्र की तरह घूमती हुई पशु, पक्षी, वृक्ष और गृह आदि पर अधिक गिरती है तथा भूमि को काटती हुई नीचे चली जाती है उसे अशनि कहते हैं।

अशिनः स्वनेन महता

निपतति विदारयन्ति धरातलं चक्रसंस्थाना।<sup>16</sup>

## blæækuŋk dk fuekz k

आचार्य वराहमिहिर ने बृहत्संहिता में इन्द्रधनुष के निर्माण की प्रक्रिया दी है कि किस प्रकार सूर्य की सात रंग की किरणें इन्द्रधनुष बनाती है। वराहमिहिर का कथन है, कि सूर्य की विविध रंग वाली किरणें जब मेघ युक्त आकाश में वायु से टकराकर छिटकती हैं तब धनुष का रूप धारण करती है, इसे इन्द्रधनुष कहते हैं।

सूर्यस्य विविधवर्णाः पवनेन विघटिताः कराः साभ्रे।

वियति धनुः संस्थापना ये दृश्यन्ते तदिन्द्रधनुः।<sup>17</sup>

## l w &pæ dk i fjos k ¼?kj k½ cuuk

सूर्य और चंद्रमा के चारो ओर मण्डलाकार जो घेरा बनता है उसे परिवेश कहते हैं। यह कैसे बनता है इसकी प्रक्रिया बताई गई है कि सूर्य और चंद्रमा की किरणें हल्के मेघयुक्त आकाश में वायु के प्रवेश के कारण छिटककर मण्डलाकार (गोले के घेरे के रूप में) नाना वर्ण रंग—बिरंगी दिखाई पड़ती है, इसी को परिवेश कहा गया है।

संमूर्छिता रवीन्द्रोः किरणाः पवनेन मण्डलीभूताः ।  
नानावर्णाकृतयस्तन्वभ्रे व्योम्नि परिवेषाः ।<sup>18</sup>

## çdk'k dh xfr

प्रकाश की गति के सम्बन्ध में ऋग्वेद के सूर्य सूक्त में उल्लेख प्राप्त होता है जो वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सूर्य के विषय में ऋग्वेद में एक मंत्र है अर्थात् तरणिविश्वदर्शतः सायण ने अपने भाष्य में लिखा है:

तथा च स्मर्यते—

योजनानां सहस्रे द्वे, द्वे शते द्वे च योजने ।

एकेन निमिषार्धेन, क्रममाण नमोऽस्तु ते ।<sup>19</sup>

अर्थात् हे सूर्य! तुम्हारी गति आधे निमेष पलक मारना में (दो हजार दो सौ दो) 2202 योजन है। सूर्य की गति कितनी तीव्र है? निमेष क्या है? तथा योजन से क्या अभिप्राय है? इसके स्पष्टीकरण के लिए महाभारत से कुछ सहायता मिलती है। काल के ज्ञान के लिए महाभारत में उल्लेख मिलता है:

काष्ठा निमेषा दश पञ्च चैव,

त्रिंशत् तु काष्ठा गणयेत् कलां ताम् ।

त्रिंशत् कलाश्चापि भवेन्मुहूर्तो

भागः कलाया दशमश्च यः स्यात् ।

त्रिंशन्मुहूर्तं तु भवेदहश्च ।<sup>20</sup>

अर्थात् काल विभाग इस प्रकार है:

15 निमेष	= 01 काष्ठा
30 काष्ठा	= 01 कला
30 कला और 03 काष्ठा	= 01 मुहूर्त
30 मुहूर्त	= एक दिन—रात

## x. kuk

- 1) 1 दिन—रात = 24 घण्टे  
24 घण्टे = 30 मुहूर्त
- 2) 01 मुहूर्त = 40 मिनिट  
01 मुहूर्त = 30 (1/30 कला)
- 3) 1 कला = लगभग सवा मिनिट (1.33 मि; या 80 सेकेण्ड)  
1 कला = 30 काष्ठा
- 4) 1 काष्ठा = लगभग 2.7 सेकेण्ड  
1 काष्ठा = 15 निमेष
- 5) 1 निमेष = लगभग 2 सेकेण्ड से कुछ कम या सेकेण्ड का पाँचवाँ भाग  
आधा निमेष = 8/75 (या सेकेण्ड का दसवाँ भाग)

भारत सरकार के एक प्रकाशन अनुसार 1 योजन = 9 मील 110 गज या 9 1/16 मील या 9.0625 मील ।

योजन का यह नाप मानने पर प्रकाश की गति 1,87,084.1 अर्थात् 1 लाख 87 हजार मील प्रति सेकेण्ड होती है। माइकेलसन (Michelson) ने प्रकाश की गति प्रति सेकेण्ड 1,87,372.5 मील मानी है ।

सर मोनियर विलियम ने अपनी पुस्तक संस्कृत—इंग्लिश डिक्शनरी में तथा वी.एस. आस्टे ने अपने संस्कृत—इंग्लिश कोष डिक्शनरी में योजन का नाप 9 मील माना है। इसके अनुसार गणना करने पर प्रकाश की गति 1,86,413.

22 मील प्रति सेकेण्ड अर्थात् 186000 मील से कुछ अधिक आती है।

### vkēkfud foKku ds vuḥ kj

आधुनिक विज्ञान के अनुसार प्रकाश की गति प्रति सेकेण्ड 1,86,281 मील मानी जाती है। इसको प्रचलित ढंग से प्रति सेकेण्ड एक लाख छियासी हजार मील ही कहा गया है। सायण का समय 15वीं शताब्दी ई. है। उसने भी प्राचीन आचार्य का वचन उद्धृत किया है। इससे स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि भारतीय आचार्य को प्रकाश की गति का स्पष्ट ज्ञान 15वीं शताब्दी से बहुत पहले से था। प्राचीन ऋषियों का यह ज्ञान अत्यन्त प्रशंसनीय है। पाश्चात्य विद्वानों ने 20वीं सदी में प्रकाश की गति की गणना और वर्तमान वैज्ञानिकों की गणना में पूरा साम्य है।

### l ḡ l u mn; gkrk gśu vLr

स वा एष (आदित्यः) न कदाचनास्तमेति, नोदेति।<sup>21</sup>

स वा एष (आदित्यः) नः कदाचनास्तमयति नोदयति।<sup>22</sup>

जब विश्व पटल पर वैज्ञानिकों के द्वारा इस दिशा में खोज जारी थी उससे बहुत पहले हमारे ब्राह्मण ग्रन्थों में सूर्य के विषय में कुछ महत्वपूर्ण बात कही गई थी। गोपथ ब्राह्मण एवं ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लेख मिलता है कि सूर्य न उदय होता है और न ही अस्त। सूर्य अपने स्थान पर स्थिर है। पृथ्वी उसका चक्कर काटती है। इसी आधार पर दिन के अन्त को सूर्यास्त और रात्रि के अन्त को सूर्योदय कहा जाता है।

### l ḡ l , oam l dh jf' e; k

सूर्य सात हैं, अर्थात् सात सौर मण्डल का संकेत ताण्डय ब्राह्मण में मिलता है।

सप्त-आदित्याः।<sup>23</sup>

सूर्य रश्मियाँ हजारों हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में सूर्य की किरणों का विश्लेषण करते हुये कहा गया है कि किरणें 100,360 या सहस्र हैं। यह सूर्य की किरणों का सूक्ष्म विश्लेषण है। शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है कि सूर्य 100 प्रकार के हैं अर्थात् उसकी किरणें 100 प्रकार की है। शतपथ में अन्य 360 सूर्य किरणों का उल्लेख है। जेमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण में सूर्य की किरणों की संख्या एक हजार दी है।

स एष (आदित्याः) एकशतविधः तस्य रश्मयः शत विधः।<sup>24</sup>

षष्टिश्च ह वै त्रीणि शतानि- आदित्यस्य रश्मयः।<sup>25</sup>

सहस्रं हैत आदित्यस्य रश्मयः।<sup>26</sup>

हरयः शता दश।<sup>27</sup>

### l ḡ l eḡ vkd" k'z k 'kfä gś

वेदों में सूर्य की आकर्षण शक्ति का अनेक मन्त्रों में उल्लेख है। सूर्य को भूलोक का धारक माना गया है। ऋग्वेद में वर्णन मिलता है कि सूर्य ने अवलंबन रहित स्थान में भूलोक को अपने आकर्षण से रोका हुआ है। सूर्य के आकर्षण के कारण ही भूलोक रुका हुआ है। आकाश में कहीं कोई अवलंबन नहीं है। भूलोक के सभी नक्षत्र आदि सूर्य की आकर्षण शक्ति से रुके हुए हैं।

सूर्येण उत्तमिता दयौ।<sup>28</sup>

अरकम्भने सविता घाम अद्वंहत्।<sup>29</sup>

ऋग्वेद में ही उल्लेख मिलता है कि सूर्य अपनी आकर्षण शक्ति से ही पृथ्वी को रोके हुए हैं। मन्त्र में आकर्षण शक्ति के लिए यन्त्र शब्द का प्रयोग हुआ है।

सविता यन्त्रेः पृथिवीम्- अरम्णात्।<sup>30</sup>

चक्रषेभूमिम्।<sup>31</sup>

यजुर्वेद में भी इसी आशय का वर्णन प्राप्त होता है:

व्यस्कम्ना रोदसी विष्णवेते  
दाधर्थ पृथिवि मितो मयूखैः।<sup>32</sup>

ऋग्वेद के एक मन्त्र में स्पष्ट संकेत है कि सभी नक्षत्रों आदि में अपनी-अपनी आकर्षण शक्ति है:

स्वर्णरम, अन्तरिक्षाणि रोचना,  
द्यावाभूमि पृथिवी स्कम्भुरोजसा।<sup>33</sup>

ऋग्वेद के एक मन्त्र में उल्लेख है कि परमाणुओं में आकर्षण शक्ति है। प्रत्येक परमाणु एक-दूसरे को अपनी ओर आकृष्ट करता है अर्थात् परमाणुओं में आकर्षण शक्ति है:

एकोअन्यत्-चकर्ष विश्वम् अनुषक्।<sup>34</sup>

## fu"d"kl

वर्तमान काल में प्रत्येक कार्य वैज्ञानिक रूप में एवं वैज्ञानिक तरीके से करने को प्राथमिकता दी जा रही है। ऊर्जा के महत्त्व का प्रतिपादन हो रहा है। वैज्ञानिक अनुसंधानों से निर्मित ऊर्जा के स्रोत भी मानवीय आवश्यकताओं के सामने बौने सिद्ध हो रहे हैं ऐसी स्थिति में सम्पूर्ण विश्व का बौद्धिक चिन्तन प्राकृतिक स्रोतों की ओर उन्मुख हो रहा है। वर्तमान समय की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए इस समस्या का समाधान वैदिक साहित्य में प्राप्त हो सकता है। इस शोधालेख का यही उद्देश्य और प्रदेय भी है। वैदिक साहित्य में सूर्य की ऊर्जा का अक्षय भण्डार कहा गया है। सौर ऊर्जा का प्रयोग वर्तमान युग में प्रारम्भ हो चुका है। वैज्ञानिक चिन्तन को अभी इस क्षेत्र में अत्याधिक अनुसंधान करने की आवश्यकता है। यदि हम ऐसा कर पाए तो निश्चित रूप में ऊर्जा की समस्या का समाधान हो सकता है।

## I nHkz I ph

1. ऋग्वेद 1-115, यजुर्वेद 7-42, अथर्ववेद 13-2-35
2. ऋग्वेद 1-163
3. यजुर्वेद 29-13
4. अथर्ववेद 5-24-1
5. अथर्ववेद 8-10 (5)
6. ऋग्वेद 8-72-16
7. ऋग्वेद 3-35-2, 4-50-4, 4-45-9, अथर्ववेद 6-105-3, 7-107-1, 8-72-16, 13-3-16
8. वेदों में विज्ञान- डॉ. कपिल द्विवेदी, पृष्ठ 19
9. ऋग्वेद 2-13-6
10. ऋग्वेद 10-181-3
11. ऋग्वेद 8-68-9
12. ऋग्वेद 3-44-3
13. ऋग्वेद 10-27-22
14. ऋग्वेद 10-27-21

15. अथर्ववेद 7-18-2
16. वृहत्संहिता- अध्याय 33, श्लोक-5
17. वृहत्संहिता- अध्याय 35, श्लोक-1
18. वृहत्संहिता- अध्याय 34, श्लोक-1
19. सायण ऋग्वेद 1-50-4 मंत्र की व्याख्या
20. महाभारत शान्तिपर्व अध्याय 231, श्लोक 12 और 13
21. ऐतरेय ब्राह्मण 3-44
22. गोपथ उत्तर 4-10
23. ताण्डय ब्राह्मण 23-15-3
24. शतपथ ब्राह्मण 10-2-4-3
25. शतपथ ब्राह्मण 10-5-4-4
26. जेमनीय उपनिषद् 1-44
27. ऋग्वेद 6-47-18
28. ऋग्वेद 10-85-1
29. ऋग्वेद 10-149-1
30. ऋग्वेद 10-149-2
31. ऋग्वेद 1-52-12
32. ऋग्वेद 5-16
33. ऋग्वेद 10-65-4
34. ऋग्वेद 1-52-16

\*\*\*\*\*